अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम - ने सूरा नस्र उतरने के बाद जब भी कोई नमाज़ पढ़ी , उसके अंदर यह दुआ ज़रूर पढ़ी : (ऐ अल्लाह , ऐ हमारे रब , तू अपनी प्रशंसा के साथ पाक है। ऐ अल्लाह , तू मुझे माफ कर दे।)

मुसलमानों की माता आइशा -रज़ियल्लाहु अनहा - का वर्णन है , वह कहती हैं : अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम - ने सूरा नस्र उतरने के बाद जब भी कोई नमाज़ पढ़ी , उसके अंदर यह दुआ ज़रूर पढ़ी : (ऐ अल्लाह , ऐ हमारे रब , तू अपनी प्रशंसा के साथ पाक है। ऐ अल्लाह , तू मुझे माफ कर दे।) उन्हीं से रिवायत है , वह कहती हैं : अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम - रुकू तथा सजदे में यह दुआ बहुत ज़्यादा पढ़ा करते थे : (ऐ अल्लाह , ऐ हमारे रब , तू अपनी प्रशंसा के साथ पाक है। ऐ अल्लाह , तू मुझे माफ कर दे।) दरअसल ऐसा करके आप क़ुरआन के अंदर दिए गए आदेश का पालन करते थे।

[सहीह] [इसे बुख़ारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है]

मुसलमानों की माता आइशा रज़ियल्लाहु अनहा बयान फ़रमा रही हैं कि जब उच्च एवं महान अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर {إذا جـاء نصـر اللـه والفتـح} अर्थात "जब अल्लाह की मदद और विजय आ जाए" उतारा , तो आपने फ़ौरन अल्लाह के आदेश {فسبح بحمد ربك واستغفره} "तो अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उसकी पवित्रता का वर्णन करो और उससे क्षमा माँगो। " का पालन करना शुरू कर दिया। चुनांचे आप नमाज़ के अंदर रुकू और सजदे में बहुत ज़्यादा "سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمدِكَ، اللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِي" पढ़ते थे। «سبحانك» यानी ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पाकी बयान करता हूँ और तुझको हर कमी से शुद्ध क़रार देता हूँ , जो तेरी महिमा के योग्य नहीं है। «اللهم ربنا وبحمدك» ऐ अल्लाह , हमारे पालनहार ! तेरी सर्वोत्तम स्तुति एवं आराधना कि तेरी ज़ात , तेरे गुण और तेरे कर्म सभी पूर्णतम के उच्चतम स्तर पर हैं। «اللهم اغفر لي» ऐ अल्लाह ! मेरे गुनाहों को मिटा दे और उन्हें क्षमा कर दे।

http://www.sunnah.global/hadeeth/hi/show/5212